प्रातः क्लास 2/1/69 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। रूहानी बच्चों को बाप ने समझाया है यहां तुम बच्चों को इस ख्याल से जरूर बैठना होता है यह बाबा भी है, टीचर भी है, सद्गुरू भी है और यह भी महसूस करते हो बाप को याद करते–करते पवित्र बन और जा करके पवित्रधाम में पहुंचेंगे। बाप ने समझाया है पवित्र धाम से ही तुम नीचे उतरते हो। उसका नाम ही रखा हुआ है सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो..... अभी तुम समझते हो हम नीचे गिरे हुये हैं अर्थात् वेश्यालय में हैं। भल तुम संगम युग पर हो; परन्तु ज्ञान से तुम यह जानते हो हमने किनारा किया हुआ है। फिर भी अगर हम शिवबाबा की याद में रहते हैं तो शिवालय दूर नहीं। शिवबाबा को याद नहीं करते हैं तो शिवालय बहुत दूर है। सजाएं खानी पड़ती हैं ना। तो बहुत दूर हो जाता है। तो बाप बच्चों को कोई (जा)स्ती तकलीफ नहीं देते हैं। एक तो बार–बार कहते हैं मनसा–वाचा–कर्मणा पवित्र बनना है। यह आँखें भी बड़ा धोखा देती हैं। बहुत सम्भाल के चलना होता है। बाबा ने समझाया है ध्यान और योग बिल्कुल अलग है। योग अर्थात् याद। आँखें खुले होते तुम याद कर सकते हो। ध्यान को कोई योग नहीं कहा जाता। ध्यान में जाते हैं तो .... को न योग, न ज्ञान कहा जाता है। भोग भी ले जाते हैं तो डायरेक्शन अनुसार जाना है। इसमें माया भी बहुत है। माया ऐसी है जो एकदम दर–बदर कर देती है। बड़ी बलवान है। जैसे बाप बलवान है वैसे माया भी (बलवा)न है। इतनी बलवान है जो सारी दुनियां को वेश्यालय में डाल दिया है। बहुत बच्चियां थी भोग आदि (लगा)ती थीं, माया ऐसी है जो उन्हों को भी वेश्यालय में ढकेल दिया। इसलिये इसमें बहुत खबरदारी रखनी होती .... बाप के कायदे अनुसार याद चाहिए। कायदे के विरुद्ध कोई काम किया तो एकदम गिरा देती है। ध्यान की कब इच्छा भी न रखनी चाहिए। इच्छा मात्रम् अविद्या। कोई भी इच्छा नहीं रखनी है। बाप तुम्हारी सभी (काम)नाएँ बिगर माँगे पूरी कर देते हैं अगर बाप की आज्ञा पर चले तो। अगर बाप की आज्ञा का उलंघन कर ..... रास्ता लिया तो हो सकता है स्वर्ग में जाने बदली नर्क में ही गिर जायें। गायन भी है गज को ग्राह ....या। बहुतों को ज्ञान देने वाली, भोग लगाने वाली आज है नहीं। क्योंकि कायदे का उलंघन करते हैं तो फिर मायावी बन जाते हैं। डीटि बनते2 डेविल बन जाते हैं। बाप जानते हैं, बच्चे भी जानते हैं। बहुत अच्छे देवता बनने पुरूषार्थ करते थे असुर बन असुरों साथ ही रहते हैं। ट्रेटर हो जाते हैं। बाप का बनकर फिर जी..... माया का बन जाते हैं इनको ट्रेटर कहा जाता है। इसलिये इस मार्ग में बहुत खबरदारी चाहिए। अपने ऊ(पर) ..... रखना होता है। श्रीमत का उलंघन किया तो लम्पट, वेश्या बन जावेंगे। पता भी नहीं पड़ेगा। बाप तो ब(च्चों) सावधान करते हैं। श्रीमत का उलंघन न करना है। आसुरी मत पर चलने से ही तुम्हारी यह बुरी गति हुई .... कदम कहां पड़ जाते हैं। एकदम रसातल पहुंच जाते हैं। श्रीमत पर न चले, बेपरवाह बने तो पातल(पाताल में) चले जावेंगे। कल भी बाबा ने समझाया बहुत गोप हैं आपस में कमिटियां आदि बनाते हैं जो करते हैं श्रीमत के आधार बिगर करते हैं, तो डिस–सर्विस करते हैं। बिगर श्रीमत करेंगे तो गिरते ही जावेंगे। बाबा ने शुरू में भी कमिटि बनाई थी तो माताओं की ही बनाई थी। क्योंकि कलश भी तो माताओं को मिल(ता) .... वन्देमात्रम् गाई हुई है। अगर गोप लोग कमिटि बनाते हैं वन्दे गोप तो गायन ही नहीं। श्रीमत पर नहीं माया के चाल पर फंस पड़ते हैं। ऐसे लॉ नहीं कहता। बाबा ने भी माताओं की कमिटि बनाई। उन्हों के ह.... सभी कुछ कर दिया। बच्चियां ट्रस्ट वर्धी होती हैं। मेल नहीं। पुरूष अक्सर करके दिवाला मारते हैं। स्त्रियां (नह)ीं कब सुना है फलानी स्त्री ने दिवाला मारा? तो बाप भी कलश माताओं पर रखते हैं। इस ज्ञान मार्ग में (मा)ताएं भी, कन्याएँ भी दिवाला मार सकती हैं। पदमापदम भाग्यशाली जो बनने वाले हैं वह माया से हार खा (दिव)ाला मार सकते हैं। इसमें स्त्री–पुरूष दोनों दिवाला मार सकते हैं और मारते भी हैं। उसमें सिर्फ़ पुरूष दि(वाला) मारते हैं। यहां तो कितने हार खाकर चले गये गोया दिवाला मार दिया ना। बाप बैठ समझाते हैं भारतवा.... .....दिवाला मारा है। माया कितनी जबरदस्त है। समझ नहीं सकते हम क्या थे। कहां से एकदम नीचे

हैं। यहां भी ऊंच चढ़ते2 फिर श्रीमत को भूल अपनी मत पर चलते हैं तो दिवाला मार देते हैं। फिर बताओ उनका क्या हाल होगा। वह तो दिवाला मारते हैं 5/7 वर्ष बाद फिर खड़े हो जाते हैं। यहां तो 84 जन्मों का दिवाला मार देते हैं फिर ऊंच पद पा न सकें। दिवाला मारते ही रहते हैं। बाबा के पास फोटो होता तो दिखलाते। तुम समझेंगे बाबा तो बिल्कुल ठीक कहते हैं। यह कितना महारथी, बहुतों को उठाते थे। आज है नहीं। दिवाले में हैं। यहां ऊंच पद तो बहुत हैं; परन्तु फिर खबरदार न रहेंगे तो ऊपर से एकदम नीचे गिर पड़ेंगे। माया हप कर लेती है। बच्चों को बहुत खबरदार होना है। अपनी मत पर कमेटियां आदि बनाना इसमें कुछ रखा नहीं है। आपस में मिल झरमुई झगमुई फलाना ऐसा करता था, फलाना ऐसा करता है, फलाना ऐसा करता है सारा दिन यही करते रहते हैं। बाप से बुद्धि योग, जिससे ही सतोप्रधान बनना है। वह टूट पड़ता है। बाप का बनकर फिर बाप से योग नहीं लगाते श्रीमत का उलंघन करते हैं तो एकदम गिर पड़ते हैं। कनेक्शन ही (टू)ट पड़ता है। लिंक टूट जाये तो घबराना चाहिए माया हमको इतना तंग क्यों करती है। कोशिश कर बाप को .... साथ लिंक जोड़नी चाहिए, नहीं तो बैटरी चार्ज कैसे होगी? विकर्म होने से बैटरी डिसचार्ज हो जाती है। ऊँच चढ़ते–2 गिर पड़ते हैं। तो एकदम भारिये का भारिये(भारी से भारी) बन जाते हैं। जानते हो ऐसे ढेर हैं। शुरू में कितने ....र वेग में आकर बाबा का बने। भट्ठी में आये। फिर आज कहां हैं वैश्यालय में है ना। गिर पड़े। क्योंकि पुरानी दुनियां आई। अभी बाप कहते हैं मैं तुमको बेहद का वैराग्य दिलाता हूं। इस पुरानी दुनियां से दिल नहीं लगानी है। दिल लगाओ स्वर्ग से। मेहनत है। अगर यह ल0ना0 बनना चाहते हैं तो मेहनत करनी पड़ी ना। बुद्धि योग एक बाप के साथ होना चाहिए। पुरानी दुनियां से वैराग्य। अच्छा पुरानी दुनियां को भूल जावें। यह तो (ठ)ीक है। भला याद किसको करें? शान्तिधाम सुखधाम को। जितना हो सके उठते बैठते चलते बाप को याद ..., बेहद के सुख को, स्वर्ग को याद करो। यह तो बिल्कुल सहज है। अगर इन दोनों आज्ञाओं से उल्टा चलते तो फिर पद भ्रष्ट हो पड़ते हैं। तुम यहां आये ही हो नर से ना0 बनने लिये। सभी को कहते हो तमोप्रधान .... सतोप्रधान बनना है। क्योंकि रिटर्न जर्नी होती है। वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी रिपीट माना नर्क से स्वर्ग, फिर स्वर्ग से नर्क। यह चक्र फिरता ही रहता है। बाप ने कहा है यहां स्वदर्शनचक्रधारी होकर बैठो। इसी याद में (र)हो। हमने कितनी वारी चक्र लगाया है। हम स्वदर्शनचक्रधारी हैं। अभी फिर से देवता बनते हैं। दुनियां में कोई ..... इस राज़ को नहीं समझते हैं। यह ज्ञान देवताओं को तो सुनना ही नहीं है। वह तो है ही पवित्र। उनमें (ज्ञा)न है नहीं जो शंख बनावे। पवित्र भी हैं इसलिये उनको यह निशानी देने की दरकार ही नहीं। निशानी तब होती है जब दोनों इकट्ठे होते हैं। तुमको भी नहीं देते हैं क्योंकि तुम आज देवता फिर कल असुर बन जाते हो। माया गिराती है ना। बाप देवता बनाते हैं, माया असुर बनाती है। बाप जब समझाते हैं तब पता पड़ता है सचमुच अवस्था हमारी गिरी हुई है। कितने बिचारे शिवबाबा के खजाने में जमा (कर)ाकर सभी कुछ फिर असुर बन जाते हैं। जब सभी कुछ जमा करा दिया तो गोया शिवबाबा के बन गये। ..... फिर असुर क्यों बनते। इसमें योग की यात्रा मुख्य है। योग से ही पवित्र बनना है। नालेज पर इतना नहीं है जितना पवित्रता पर। बुलाते भी हो बाबा आकर हमको पावन बनाओ। जो हम स्वर्ग में जा सकें। याद की यात्रा है ही पावन बन ऊंच पद पाने के लिये। जो मर जाते हैं, वेश्यालय में चले जाते हैं। फिर भी कुछ (न) कुछ सुना है तो शिवालय में आवेंगे जरूर। फिर पद भल कैसा भी पावे; परन्तु आते हैं जरूर। एक बार याद किया (तो) स्वर्ग में आ जावेंगे। बाकी ऊंच पद नहीं। स्वर्ग का नाम सुनकर खुश नहीं होना चाहिए। फेल होकर पाई पैसे (का) पद पा लेना इसमें खुश न होना चाहिए। भल स्वर्ग है; परन्तु उसमें पद तो बहुत हैं ना। फीलिंग तो (आती) है ना। मैं नौकर हूं, मेहतर हूं। पिछाड़ी में तुमको सभी सा0 होंगे। हम क्या बनेंगे। हम से क्या विकर्म हु... ऐसी हालत हुई है। मैं महारानी क्यों नहीं बनूं। कदम कदम पर खबरदारी से चलने से तुम पदमपति ....। खबरदारी नहीं तो पदमपति बन न सकेंगे। मंदिरों में देवताओं को पदमपति की निशानी दिखाते

हैं। फर्क तो समझ सकते हो ना। दर्जे का तो बहुत फर्क है। अभी भी देखो दर्जे कितने हैं। कितना डब डबा रह... है। है तो अल्पकाल का सुख। वह तो सारी आयु राजाएं थे। अभी प्राईममिनिस्टर सारी आयु नहीं रह सकते हैं वा उनका हेयर अपरेन्ट प्राईममिनिस्टर नहीं बन सकता। वह हकदार नहीं हो सकता। तो अभी बाप कहते हैं यह ऊंच पद पाना है जिसके लिये ही सभी हाथ उठाते हैं तो इतना पुरूषार्थ करना है। हाथ उठाने वाले भी खुद खत्म हो जाते हैं। कहेंगे यह देवता बनते थे। पुरूषार्थ करते खत्म हो गये। हाथ उठाना तो सहज है। बहुतों को समझाना भी सहज है। महारथी समझाते2 भी गायब हो जाते हैं औरों का कल्याण कर फिर खुद अपना अकल्याण कर बैठते हैं। इसलिये बाप समझाते हैं खबरदार रहो। अन्तर्मुख हो बाप को याद करो, किस प्रकार से? बाबा हमारा बाप भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। हम अभी जा रहे हैं। पहले स्वीट होम में जावेंगे। यह स(भी) ज्ञान अन्दर में होनी चाहिए। बाप में ज्ञान और योग दोनों हैं। तुम्हारे में भी होना चाहिए। जानते हो शिवबाबा पढ़ाते हैं तो ज्ञान भी हुआ, याद भी हुई। ज्ञान और योग दोनों इकट्ठा चलता है। ऐसे नहीं योग में बैठ बाबा को याद करते रहें, नालेज भूल जायें। बाप योग सिखलाते हैं तो नालेज भूल जाते हैं क्या। सारी नालेज उनमें रह(ती) है। तुम बच्चों में नालेज होनी चाहिए। पढ़ना चाहिए। जैस कर्म मैं करूंगा मुझे देख और भी करेंगे। न प(ढ़ा) तो और भी नहीं पढ़ेंगे। मैं जैस दुर्गति को और भी ऐसे दुर्गति को पावेंगे। मैं निमित्त बन जाऊंगी औरों को गिराने की। ऐसे बहुत अच्छे2 महारथी हैं तो(जो) मुरली नहीं पढ़ते हैं। महारथी जो सेन्टर सम्भालने वाले हैं उनके लिये बाप कहते हैं कि ऐसे2 महारथियों को माया हप कर लेती है। मुरली नहीं पढ़ते हैं। मिथ्या अहंकार आ जाता है। माया झट वार कर लेती है। कदम2 पर श्रीमत चाहिए, नहीं तो कुछ न कुछ विकर्म बन जा(ते) हैं। बहुत बच्चे भूलें करते हैं फिर सत्या ही नाश हो जाते हैं। गफलत होने से माया थप्पड़ लगा देती है। वर्थ नॉट ए पेनी बना देती है। अहंकार आने से माया बहुत विकर्म कराती है। बाबा ने थोड़े ही कहा है ..... 2 की कमिटियां आदि बनाओ। कमिटि में हेड एक/दो फिमेल जरूर चाहिए। जिसके ही राय पर काम हो। कलश (तो) ल0 पर रखा जाता है ना। गायन भी है अमृत पिलाती थी। फिर कहां यज्ञ में विघ्न डालते हैं। अनेक प्रकार के विघ्न डालने वाले हैं। सारा दिन बुद्धि में यही झरमुई झंगमुई की बातें रहती हैं। यह बहुत खराब है। कोई भी बात है तो रिपोर्ट करो बाप को। सुधारने वाला तो एक ही बाप है। तुम अपने हाथ में लॉ नहीं उठाओ। तुम बाप की याद में रहो। सभी को बाप का परिचय देते रहो। तब ऐसा बन सकेंगे। माया बहुत कड़ी है। (किसी) को भी नहीं छोड़ती। सदैव बाप को समाचार लिखना चाहिए। डायरेक्शन लेते रहना चाहिए। यूं तो डायरेक्शन मिलते ही रहते हैं। बच्चे समझते हैं बाबा ने तो आपे ही इस बात पर समझाये दिया। बाबा तो अन्तर्यामी (है) (बा)प कहते नहीं। मैं तो नालेज पढ़ाता हूं। इसमें अन्तर्यामी की तो बात ही नहीं। हां यह जानते हैं कि यह (मे)रे बच्चे हैं। हरेक के अन्दर आत्मा मेरे बच्चे हैं। बाकी ऐसे नहीं कि बाप सभी में विराजमान है। मनुष्य उल्टा (स)मझ लेते हैं। बाप कहते हैं मैं जानता हूं सभी के तख्त पर आत्मा विराजमान है। यह तो कितनी सहज .....। सभी चैतन्य अकाल तख्त हैं। फिर भी परमात्मा को सर्वव्यापी कह देते। यह है एकजभूल। इस कारण ही भारत गिरा है। बाप कहते हैं तुमने मेरी बहुत ग्लानि की है। विश्व के मालिक बनाने वाले को तुमने गाली दी है। भगवान को सर्वव्यापी कह कितनी ग्लानि की है। इसलिये बाप कहते हैं यदा यदा हि..... बाहर वाले यह सर्वव्यापी का ज्ञान भारतवासियों से सीखी हैं। जैसे भारतवासी उनसे हुनर सीखते हैं। वह फिर उल्टा सीखते हैं। भारत ही सभी की दुर्गति के निमित्त बना है। फिर सद्गति के लिये भी निमित्त बनता है। बाप भी यहां अ.... .... बच्चों को अच्छी रीति विचार–सागर–मंथन करना है। नालेज पर बहुत2 मंथन करना चाहिए। टाइम देना तब तुम अपना कल्याण कर सकेंगे। इसमें पैसे आदि की भी बात नहीं। भूख से कोई मर न सके। जितना जो..... के पास जमा करते हैं फिर कहते हमको वापस दे दो। शास्त्रों में भी है ना देकर फिर वापस लेते हैं तो चण्डाल (बन) जाते। ऐसे2 होता है। बाप ने समझाया है ज्ञान भक्ति के बाद है वैराग्य। वैराग्य माना सभी कुछ भूल जाना पड़ता है। अपन को डिटैच कर देना चाहिए शरीर से। हम आत्मा जा रहे हैं। अच्छा, गुडमॉर्निंग और नमस्ते।